2021

HINDI — HONOURS

Paper : DSE-A-2(2)

(Tulsidas)

Full Marks : 65

The figures in the margin indicate full marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2×10

(क) तुलसीदास का जन्मस्थान और जन्मकाल बताइए।

(ख) तुलसीदास की किन्हीं दो कृतियों के नाम लिखिए।

(ग) 'कवितावली' और 'रामचरितमानस' में कितने-कितने काण्ड हैं?

(घ) 'रामचरितमानस' में प्रयुक्त किन्हीं दो छन्दों के नाम लिखिए।

(ङ) 'कवितावली' और 'रामचरितमानस' की काव्य-भाषा के नाम बताइए।

(च) 'चली नाई पद पदुम सिरू अति हित बारहिं बार'– 'पद पदुम' में निहित शब्दालंकार तथा अर्थालंकार के नाम लिखिए।

(छ) 'राम चलत अति भयउ विषादू। सुन न जाइ पुर आतर नादू।।
कुसगुन लंक अवध अति सोकू। हरष विषाद बिबस सुरलोकू।।'
— इस चौपाई में वर्णित रस तथा उसका स्थायी भाव बताइए।

(ज) नर-नाग बिबुध-बन्दिनी जय 'जहनु बालिका'। — इस पंक्ति में 'जहनु' कौन है तथा 'जहनु बालिका' किसे कहा गया है?

(झ) 'करू संग सुसील सुसंतन सों, तजि कूर कुपंथ कुसाथहि से' — यह पंक्ति किस कृति की है तथा इसमें कौन-सा अलंकार है?

(ञ) 'कासी मरत उपदेसत महेसु सोई'— यहाँ 'महेसु' कौन हैं और वे क्या उपदेश देते हैं?

2. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 10×3

(क) 'कवितावली' का मूल प्रतिपाद्य क्या है? सोदाहरण विवेचन कीजिए।

(ख) महाकाव्य की विशेषताओं के आधार पर 'रामचरितमानस' का मूल्यांकन कीजिए।

(ग) तुलसी के काव्य की भाषागत विशेषताएँ बताइए।

(घ) 'विनयपत्रिका' में निहित भक्ति भाव का विश्लेषण कीजिए।

(ङ) तुलसीदास के सामाजिक चिंतन पर विचार कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×3

(क) सियराम-सरूप अगाध अनूप बिलोचन-मीनन को जलु है।
श्रुति रामकथा, मुख रामको नामु, हिएँ पुनि रामहि को थलु है।।
मति रामहि सों, गति रामहि सों, रति रामसों, रामहि को बलु है।
सबकी न कहै, तुलसी के मते, इतनो जग जीवन को फलु है।।

(ख) पाइ सुदेह बिमोह-नही-तरनी न लही करनी न कहू की।
राम कथा बरनी न बनाइ, सुनी न कथा प्रहलाद न ध्रू की।
अब जोर जरा जरि गात गयो, मन मानि गलानि कुबानि न मूकी।
नीके कै ठीक दई 'तुलसी', अवलंब बड़ो उर आखर दू की।।

(ग) मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई।
हौं तो साईं द्रोह पै सेवक हित साईं ।।
राम सो बड़ो है कौन मोसो कौन छोटो।
राम सो खरो कौन है मोसो कौन खोटो।।
लोक कहै राम को गुलाम हौं कहा वौं।
एतो बड़ो अपराध भौ न मन बावौं।।
पाथ माथे चढ़े तृन तुलसी ज्यों नीचो।
बोरत न बारि ताहि जानि आपु सींचो।।

(घ) भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जग जाल।।
सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन।।